बच्चों को होमवर्क नहीं, बल्कि चुनौती दें

द्रोण साहू

बच्चे स्कूलों में अच्छे-से पढ़ें, यह हम सभी चाहते हैं और इसके लिए प्रयास भी करते रहते हैं। यह लेख ऐसे कुछ टास्क प्रस्तुत करता है जो बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। लेखक कहते हैं कि एकल शिक्षक होते हुए सभी कक्षाओं को सँभालना मुश्किल होता है। लेकिन वे हमेशा यह सोचते और चाहते भी थे कि बच्चे स्कूल में हैं तो सीखना होता रहे। उन्होंने कुछ ऐसे टास्क बनाए जिनसे बच्चे सीखने में रत रहें, और वे ख़ुद अन्य कक्षाओं के लिए भी कुछ समय दे पाएँ। -सं.

यह बात उस समय की है, जब मेरे स्कूल में कुल 84 बच्चे थे। मैं वहाँ एक अकेला शिक्षक था। कक्षा 1 से 5 तक, सभी कक्षाओं को मुझे ही सँभालना था। काम करते हुए मुझे हमेशा लगता था कि मैं सभी बच्चों की सीखने में उपयुक्त मदद नहीं कर पाता हूँ। एकल शिक्षक की यह समस्या है ही। मैं अपनी इस एकल शिक्षकीय स्थिति में, बच्चों के साथ कुछ अर्थपूर्ण कर पाने के तरीक़ों के बारे में सोचता था। काम करते-करते मुझे एक तरीक़ा कुछ ठीक महसूस हुआ। यह तरीक़ा था बच्चों को ऐसे टास्क देना, जो उन्हें दिलचस्प लगें और जिनमें उनको जूझना पड़े, लेकिन अन्ततः वे दिए गए काम को कर भी सकें। ऐसे कुछ टास्क मैंने बनाए और बच्चों ने किए। जब बच्चों ने ये टास्क किए तो मुझे यह भी पता चला कि यह तरीक़ा केवल स्कूल में ही बच्चों को सीखने में व्यस्त रखने में मदद नहीं करता, बल्कि स्कूल के बाद और छुट्टियों के समय घर पर भी यह बच्चों को सीखने में व्यस्त रखने में बहुत मदद करता है। इसका कारण यह है कि स्कूल में मिले इन कामों को बच्चे घर में जाकर भी किसी भी हाल में पूरा करके ही दम लेते हैं। कक्षा में किए गए ऐसे दो टास्क का विवरण इस लेख में है।

पहला विवरण कक्षा पाँचवीं के बच्चों के साथ का है। पाँचवीं की पाठ्यपुस्तक में 'रोबोट' शीर्षक से एक पाठ है। मैंने इस पाठ को पढ़ाया और उसके बाद बच्चों को रोबोट द्वारा किए जा सकने वाले कार्यों को लिखने को कहा।

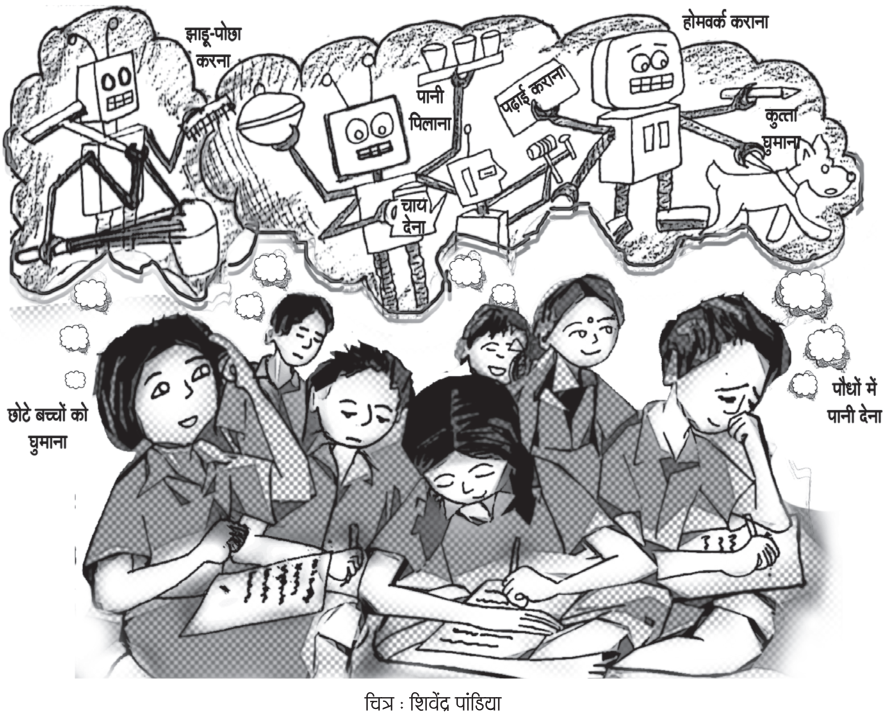
पाँचवीं कक्षा में पढ़ाने के बाद मैं, कक्षा 2 को पढ़ाने के लिए चल दिया। जैसा कि एकल शिक्षक के साथ अकसर होता है, मेरे साथ भी वही हुआ। कुछ ही देर में पाँचवीं कक्षा के दो बच्चों ने आकर मुझसे शिकायत की कि सर, कोई भी बच्चा दिया गया काम नहीं कर रहा है। सब बच्चे हल्ला और लड़ाई कर रहे हैं। मैं तुरन्त पाँचवीं कक्षा की ओर भागा। मेरे कक्षा में पहुँचते ही सारे बच्चे एकदम शान्त बैठ गए। मुझे बहुत ग़ुस्सा आ रहा था, पर मन-ही-मन यह भी सोच रहा था कि इन्हें ऐसा कौन-सा काम दूँ, जिससे ये मन लगाकर काम भी करते रहें और मैं अन्य कक्षाओं की ओर भी ध्यान दे सकूँ।

मैंने बच्चों से रोबोट वाले पाठ पर बातचीत करते हुए कहा, "तुम सब हल्ला और लड़ाई करने में माहिर हो, पर क्या तुम यह लिख सकते हो कि रोबोट कौन-कौन से काम कर सकता है? तुम्हारे पास 30 मिनट का समय है। देखते

हैं, इस दिए गए समय में रोबोट द्वारा किए जाने वाले कितने कार्यों को आप लिख सकते हैं?'' बच्चों को थोड़ी चुनौती और उत्सुकता महसूस हुई। बच्चे कहने लगे कि रोबोट झाड़ू लगा सकता है, फ़ोन का जवाब दे सकता है, आदि। मैंने उनसे कहा, ''ऐसे ही रोबोट द्वारा किए जा सकने वाले कामों की आपको लम्बी-से-लम्बी सूची बनानी है।'' मेरे ऐसा कहने पर सारे बच्चे शान्त होकर सोचने लगे। फिर उनमें से एक बच्चे ने सवाल किया, ''सर, ज़्यादा-से-ज़्यादा कितना लिखेंगे?'' मुझे उन्हें अधिक-से-अधिक देर तक व्यस्त रखना ही था, इसीलिए मैंने जवाब दिया, ''कम-से-कम 20 तो लिखना ही है और जितना ज़्यादा लिख सको उतना अच्छा होगा!'' ऐसा कहकर मैं फिर से कक्षा 2 में चला गया। यह बात लगभग 12:00 बजे के आसपास की होगी। कक्षा 2 में अपना काम करके मैं कक्षा 1 में चला गया। कक्षा 2 और फिर कक्षा 1 में ही मुझे लगभग 1:30 बज गए। आश्चर्य की बात यह थी कि कक्षा 5 से अभी तक कोई भी शिकायत, या कोई पानी-पेशाब की छुट्टी लेकर मेरे पास नहीं पहुँचा था। मुझे थोड़ा अजीब लगा। 1:30 बज चुके थे और मध्याह्न भोजन की छुट्टी भी देनी थी। मैंने पाँचवीं कक्षा में जाकर देखा कि सारे बच्चे रोबोट के काम लिखने में मगन थे। कक्षा में एकदम सन्नाटा था। सभी बिना अपना समय गँवाए लिखने में व्यस्त थे। चूँकि मैंने कहा था कि सबको अपना-अपना लिखना है तो सभी बच्चे एक दूसरे से कुछ दूर बैठे लिख रहे थे। आख़िर मैंने ही उनका ध्यान तोड़ा और कहा, ''चलो, लिखना बन्द करो, अब सब खाना खाते हैं। उसके बाद किसने कितना लिखा है, देखेंगे!''

मध्याह्न भोजन के बाद सारे बच्चे कक्षा में पहले ही बैठ गए। अमूमन ऐसा दूसरे दिनों में होता नहीं था। बैठने की घण्टी लगने के बाद भी वे खेलते रहते थे। जल्दी ही वे मुझे बुलाने

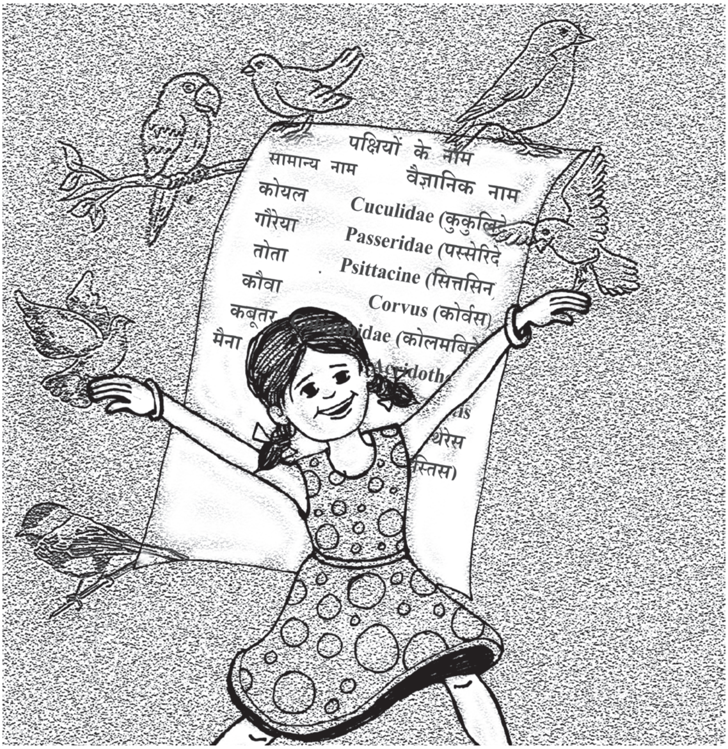
रोबोट द्वारा किए जाने वाले काम लिखो



चित्र : शिवेंद्र पांडिया

भी आ पहुँचे और बोले, “चलो न सर, देखना कि किसने कितना ज़्यादा लिखा है!” मैं कक्षा में गया और सबकी कॉपियों को एक दूसरे से बदलने के लिए कहा। उसके बाद उनसे कहा कि किसने कितना काम लिखा है, आख़िर में गिनती करके संख्या नीचे लिख दो। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कक्षा में उस दिन उपस्थित सभी 17 बच्चों ने रोबोट के कम-से-कम 20-25 काम लिखे थे।

और तो और, यह काम बच्चों ने घर पर जाकर भी किया, क्योंकि दूसरे दिन मुझे पता चला कि बच्चों ने लिखे गए वाक्यों में कुछ और वाक्य भी जोड़े थे। उनसे बातचीत की तो पता चला कि कुछ ने अपने बड़े भाई-बहनों से बातचीत करके और कुछ ने गूगल पर रोबोट और उसके कामों के बारे में पढ़कर बहुत-से वाक्य लिखे थे। एक बच्चा ऐसा था जिसने रोबोट के पूरे 130 काम लिखे थे।



चित्र : शिवेंद्र पांडिया

ऐसा ही एक और उदाहरण कक्षा 4 के बच्चों के साथ किए गए काम का है। कक्षा 4 में भाषा की पाठ्यपुस्तक में ‘चित्रकार मोर’ नामक एक पाठ है। मैं अकसर बच्चों को होमवर्क देता था, लेकिन अधिकांश बच्चे होमवर्क करके लाते नहीं थे। इसलिए यहाँ भी मैंने होमवर्क के लिए कुछ नए टास्क सोचे। उदाहरण के लिए, इस पाठ को पढ़ते हुए यह चर्चा हुई थी कि हर पक्षी के दो तरह के नाम होते हैं– एक सामान्य, जिसका उपयोग अकसर हम करते हैं और एक वैज्ञानिक नाम। मैंने बच्चों को कहा कि उन्हें उन पक्षियों के नाम अपनी भाषा में लिखने हैं जो वे अपने आसपास देखते हैं, और फिर उनके वैज्ञानिक नाम भी लिखने है। सभी बच्चे अपने द्वारा लिखे इन नामों को कक्षा में पढ़कर सुनाएँगे।

अगले दिन लगभग सभी बच्चे यह काम करके लाए थे। उन्होंने पहले अपनी भाषा में पक्षी का नाम लिखा और फिर उसी का वैज्ञानिक नाम। हालाँकि इस काम में भी उन्हें अपने बड़ों व अन्य संसाधनों की मदद लेनी पड़ी, लेकिन सभी बच्चों ने यह काम किया। कुछ बच्चों ने 5-6 पक्षियों के नाम लिखे तो कुछ ने 10-12 के। एक बच्चा तो 50 पक्षियों के वैज्ञानिक नाम लिखकर लाया था।

इन अनुभवों पर मेरी सोच

इस तरह के और भी काम मैंने बच्चों के साथ कक्षा में किए। ऐसे कुछ कामों के उदाहरण



चित्र : शिवेंद्र पांडिया

इस लेख के अन्त में दिए गए हैं। बच्चों ने ऐसे कामों को करने में दिलचस्पी ली और काम करने में ख़ुद को व्यस्त भी रखा। मैं इस बात पर सोचता रहा हूँ कि बच्चों को ऐसे काम क्यों अच्छे लगे! जो टास्क मैंने दिए, उनसे मैं भी यह सुनिश्चित करना चाहता था कि बच्चे सीखें। साथ ही यह भी कि उनकी सीखने में इतनी दिलचस्पी हो कि वे ख़ुद से उस प्रक्रिया में संलग्न रहें। जो काम मैंने दिए, वे कक्षा के अन्दर या बाहर करने को दिए जा सकते हैं। ये काम ऐसे नहीं हैं, जिनमें उनको सिर्फ़ दी गई विषय-वस्तु का दोहरान करना है। अकसर पाठ्यपुस्तकों में दिए गए प्रश्न ऐसे ही होते हैं। वे पाठ्यवस्तु से इतर जाने का मौक़ा ही नहीं देते। मसलन, बच्चे पाठ पढ़कर रोबोट द्वारा किए जाने वाले पाँच कामों को लिख सकते थे और यह काम यहीं ख़त्म हो सकता था। लेकिन जब उनसे कहा गया कि कम-से-कम 20 काम लिखने हैं, तब उन्होंने पाठ्यपुस्तक से इतर भी सोचने का काम किया। शायद यह कहना कि कम-से-कम कितने वाक्य लिख सकते हैं, बच्चों को अपनी क्षमताओं को जाँचने, और इसलिए सोचने व लिखने के लिए एक तरह का सकारात्मक धक्का देता है। कक्षा 5 के बच्चे पढ़ना और लिखना जानने के साथ रोबोट के बारे में पाठ के इतर भी जानते थे, इसलिए मुझे यह पता था कि वे पुस्तक से ढूँढ़कर 7-8 वाक्य लिख ही लेंगे। लेकिन वे इससे कुछ ज़्यादा कर सकते हैं, यह भी मैं जानता था, इसलिए मैंने उन्हें कम-से-कम 20 वाक्य बनाने को कहा। मुझे लगता है कि वे और ज़्यादा भी बना सकते थे। दूसरा, मुझे बाद में लगा कि कितने ज़्यादा वाक्य लिखे हैं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं रहा, जितना कि इस काम के बारे में सोचना और कम-से-कम कुछ वाक्य इस बारे में लिख पाना। पूरी कक्षा के वाक्यों को देखें तो काफ़ी वाक्य बच्चों ने बना लिए थे और उन्होंने एक दूसरे के द्वारा बनाए गए वाक्यों को भी पढ़ा। उन्होंने उनमें से उन वाक्यों को भी रेखांकित किया जो रोबोट के काम नहीं, बल्कि उसकी संरचना के बारे में थे।

मुझे यह भी लगता है कि काम के लिए दिए गए निर्देश की शब्दावली और उसे बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करने का तरीक़ा भी अकसर उससे भिन्न हो जाता है जिस तरह से

चित्र : शिवेंद्र पांडिया



कक्षाकार्य या गृहकार्य बच्चों को दिया जाता है। इनकी शब्दावली और इसमें दिए गए काम की प्रकृति में एक खुलापन रहता है, यह खुलापन शायद बच्चे के दिमाग़ को सक्रिय कर देता है और उसको सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह प्रोत्साहन एक तरह से सीखने के लिए संघर्ष करने का जज़्बा पैदा कर देता है।

दूसरे उदाहरण में भी बच्चों ने कोशिश की। इसके बावजूद भी, कि पक्षियों के वैज्ञानिक नाम लिखना मुश्किल काम है, मुख्य बात यह थी कि बच्चों ने इन कुछ पक्षियों के प्रचलित / क्षेत्रीय नाम सोचे और फिर वैज्ञानिक नाम ढूँढ़े और लिखकर भी लाए। हालाँकि बाद में मुझे यह लगा कि क्षेत्रीय नाम लिखना ही काफ़ी था। पक्षियों के वैज्ञानिक नाम लिखना कक्षा 5 के स्तर पर बहुत सार्थक अभ्यास नहीं है क्योंकि यह पक्षियों या उनके वर्गीकरण के बारे में जानने में कुछ मदद नहीं करता। अतः पक्षियों के वैज्ञानिक नाम वाले टास्क में काम कुछ ख़ास आगे नहीं बढ़ा।

टास्क देते समय कुछ बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, पाठ्यपुस्तक से सिर्फ़ नक़ल करने, बार-बार दोहराने या लिखने का काम एक अच्छा टास्क नहीं है, क्योंकि इसमें बच्चे न तो ख़ुद से कुछ सोचते हैं, न कोई प्रश्न पूछ सकते हैं, न ही जो समझा है, उसे अपने शब्दों में बता सकते हैं। माने, बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार अपने लिए कुछ कर पाएँ, ऐसी गुंजाइश ही उसमें नहीं है। शायद इसीलिए वे ऐसे कामों में मसरूफ़ होना भी पसन्द नहीं करते। वहीं कक्षा 3-4 में पाठ्यपुस्तक में दी गई अपनी मनपसन्द कहानी को चुनना और फिर उस कहानी में आए 15



चित्र : शिवेंद्र पांडिया

ऐसे शब्दों को लिखना जो 'क' अक्षर से शुरू होते हैं, या उस कहानी में क्या अच्छा लगा, इसे अपने शब्दों में लिखना भी एक रोचक टास्क हो सकता है। यह भी कि रोज़ एक जैसे टास्क नहीं देने चाहिए। बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अन्दर और उसके बाहर की भी चुनौतियाँ देनी चाहिए।

कक्षा में और गृहकार्य में दिए जाने वाले टास्क के कुछ उदाहरण :

भाषा से सम्बन्धित काम :

- पाठ में आए नाम वाले शब्द सबसे ज़्यादा कौन-कौन लिख सकते हैं?
- पुस्तक में 'म' से शुरू होने वाले शब्दों पर गोला लगाना है। देखते हैं, 10 मिनट में हम सब कितने अधिक शब्दों पर गोला लगा पाते हैं?
- बिना मात्रा वाले, दो या तीन अक्षर वाले सबसे ज़्यादा शब्द कौन-कौन लिख सकते हैं?
- अपने नाम के पहले अक्षर से प्रारम्भ होने वाले सबसे ज़्यादा शब्द कौन-कौन लिखकर ला सकते हैं?

- 'ग' अक्षर से 5 मिनट में कम-से-कम 15 शब्द लिखना।
- फल व सब्ज़ियों के चित्र और उसके नीचे उनका नाम लिखना।
- पाठ में आए तुकान्त शब्दों को लेकर 10 नई पंक्तियाँ बनाना।
- पाठ को पढ़कर पाठ पर कम-से-कम 5 नए प्रश्न बनाना।
- 15 मिनट में 10 प्रश्नवाचक वाक्य बनाना।
- अपने बड़ों से बातचीत कर कम-से-कम 10 मुहावरों या लोकोक्तियों को लिखना और उनका प्रयोग करके बताना।

गणित विषय से सम्बन्धित काम :

- 10 मिनट में ज़्यादा-से-ज़्यादा ऐसी संख्याएँ लिखना जिनका योग 40 आता है।
- तीन अंकों की संख्याओं वाले जोड़ और बाक़ी के कम-से-कम 10 सवाल बनाना।
- 1 से 100 तक की गिनती के बारे में सोचो, और कम-से-कम ऐसी 5 संख्याएँ लिखो जिनमें इकाई और दहाई के अंक समान हों। 1 से 100 के बीच ऐसी कुल कितनी संख्याएँ हैं, बता सकते हो?
- अपने आसपास देखते हुए ज़्यादा-से-ज़्यादा तिकोन के उदाहरण लिखना।
- आपके पास 5 चॉकलेट हैं, कितनी चॉकलेट और मिलाई जाएँ कि कुल 20 चॉकलेट हो जाएँ? इस तरह के 5 नए प्रश्न बनाना।

यहाँ दिए गए अधिकांश उदाहरण कक्षा 3, 4 और 5 के लिए हैं। इस तरह के टास्क देकर मैं अपनी कक्षाओं काम करता हूँ। बच्चे सीख रहे हैं और मुझे भी नए टास्क बनाने को कहते रहते हैं।

द्रोण साहू शासकीय प्राथमिक शाला बिजेमाल, महासमुंद, छत्तीसगढ़ में 15 वर्षों से पढ़ा रहे हैं। वे हिन्दी, अँग्रेज़ी और शिक्षा में स्नातकोत्तर हैं। इनकी कक्षाओं में दो भाषा समुदाय से बच्चे आते हैं, जिनके साथ वे काम करना पसन्द करते हैं। शौक़िया तौर पर शिक्षा पर कविताएँ भी लिखते हैं।

सम्पर्क : drdron2005@gmail.com